Printed by Lakshmi Narayan
at the Lakshmi Narayan Press, Moradabad.

विषय-सूची (भाग १)



समर्पण

प्यारे,

लो, अब अधिक मत बिरझो। यह खिलौना तुम्हें ही समर्पित है। तुमने कितने खिलौने तोड़े होंगे, कितने ही असावधानता के कारण कहीं गिरपड़े होंगे जिससे तुम्हारे चित्तको अवश्य संताप हुआ होगे। अच्छा अब परिताप न करो। अब यह खिलौना तुम्हारे लिये अवश्य सन्ताप-हारी होगा। यह न टूटेगा न फूटेगा। सदैव तुम्हारी छायातुल्य तुम्हारा साथ देगा। बस हो चुका, अब तो अपना हृदय प्रफुल्लित करो।

तुम्हारा प्रिय-

केशव

❀ वक्तव्य ❀

यद्यपि आधुनिक हिन्दीलेखकों में अपने ग्रन्थों में लम्बी चौड़ी "भूमिका" लिखने की प्रथा सी पड़गई है तथापि अनावश्यक लम्बी भूमिका द्वारा अपने पाठकों का समय नष्ट करना मैं युक्ति-संगत नहीं समझता। हाँ, पुस्तक के विषय और लेखक के अभि-प्राय पर कुछ सङ्केत करदेना लेखक और पाठक दोनों के लिए हितकर है। इस क्षुद्र पुस्तिका में कुछ उपयोगी विषयों पर निबन्ध लिखे गए हैं। इन प्रबन्धों में "आदर्श जीवन" यापन करके सुख और सफलता प्राप्ति के उपाय दिखाये गए हैं। चरित्रसुधार और कर्त्तव्यपरायणता ही मानवजीवन और सांसारिक उन्नति के मूलाधार हैं। अतः पूर्वोक्त गुणों को प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य-विशेषतः नवयुवकों का मुख्य धर्म है।

मेरे प्रथम उद्योग होने के कारण इसमें भाषाव्याकरण के कुछ दोष रह सकते हैं और कहीं २ विचार, एवं विषयविवेचना में भी त्रुटियां रह गई हों। यदि हमारे प्रिय पाठकगण मेरी इन त्रुटियों की सूचना मुझे देने की कृपा करेंगे तो मैं उनका चिर-कृतज्ञ हूंगा।

मेरे इस क्षुद्र उद्योग से यदि सर्वसाधारण को कुछ भी लाभ पहुँचा तो मैं अपना श्रम सफल समझूंगा।

रायगढ़
७-७-१९१२
रविवार

केशवानन्द चौबे

बालजीवन

प्रकरण १ पहला

हम और हमारा कर्त्तव्य

जगत्पिता परमेश्वर ने हमारे सुख भोग के लिए भांति २ की सामग्री हमें दी है परन्तु उनका सदुपयोग करना हमारे ही हाथ में है। यह तो सभी को प्रकट है, कि हमें एक दिन अवश्य ही मरना है, तो हम फिर क्यों न अपने जीवन को सुधारें। हमें यह भलीभांति जान लेना चाहिये कि हमें इस जीवन में क्या २ कर्त्तव्य करना है, जिससे हम सुखी रहें। इस संसार में बहुत दिन तक जीने की प्रायः सभी आशा रखते हैं। परन्तु अपने जीवनको सुधारने के प्रयत्न में लगे रहने वाले बहुत कम देखने में आते हैं।

एक अंग्रेज विद्वान् का कथन है कि हमारा जीवन क्षणभंगुर है, हमें इस पृथ्वी पर कुछ ही दिन रहकर चले जाना है, विद्या और कला का पारावार नहीं, समय पवनसे भी तेज भागनेवाला है तो फिर हमें इन कलाओंके सीखने में विलम्ब न करना चाहिये।

हमें अपने जीवन को सुखी बनाना हमारे गरीब और अमीर होने पर निर्भर नहीं है। बरन हमारे ही परिश्रम पर निर्भर है। बहुधा देखा जाता है कि मनुष्य अपने ही अवगुणों से बिगडता है, न कि दूसरों के बिगाड़ने से। बड़े २ कुटुम्ब और बड़े २ नगर इत्यादि भूकम्प की अपेक्षा मनुष्यों के अवगुणों एवं उन के कर्मों से ही बिगड़ते तथा नाश होते देखे गए हैं। वस्तुतः मनुष्य आपही अपने जीवन को सुधारता और नष्ट करता है। बहुधा हम यह भी देखते हैं, कि नाश केवल मनुष्य के

कर्मों से ही नहीं होता वरन् समय के फेरफार से भी होता है।

ईश्वर की सृष्टि में सब पदार्थ हमारे सुख भोगके लिये ही हैं। परन्तु उनका दुष्प्रयोग करनाही हमारे नाशका मूल कारण है।

मनुष्य को बहुधा अपनी युवा अवस्थाही से अपने जीवन का भार अपने सिरपर सहना पड़ता है। पहले तो वह भार उसे बहुत सुख-दायी और सुलभ जान पड़ता है परन्तु ज्यों २ उम्र बढ़ती जाती है त्यों २ उसे वही बोझ बहुत कठिन और दुःखदायी प्रतीत होने लगता है। हमारे जीवन को दुःखदायी बनाने के लिये इस संसार में कई एक पदार्थ हैं, जैसे स्वार्थी होना, फुज़ूलखर्ची, दूसरों को अपनी दृष्टि में कम या नीच समझना, क़र्ज़ लेना और शराबख़ोर होना इत्यादि कई एक बातों से हम अपने जीवन को नाश कर लेते हैं। साथ

ही ईश्वरने हमारे लिये कई एक पदार्थ, कई एक जीव जन्तु इस संसार में पैदा कर रक्खे हैं कि जिनके अवलोकन से ही प्रायः हम अपने जीवन को सुखदायी बनानेके लिये सूत्र मान सकते हैं।

मानवजीवन मृणालयुत कमल पुष्पों का बिछौना है या कांटों से भरा गुलाब का फूल है। वह भांति २ के कष्ट और नानाप्रकार के सुखों का भण्डार है।

हमें अपने दुःखोंसे निराश न होना चाहिए। और अपने सुखों में खुशी न मनाना चाहिए। हम को अपने सुख दुःख को एक समान समझना चाहिए। हमें ऐसे पदार्थों के ग्रहण करनेकी इच्छा न रखनी चाहिए जिनका पाना दुर्लभ हो। कभी २ यह देखने में आता है कि जिन पदार्थों को हम बुरा समझते हैं और जिनसे हमें कष्ट मिलता है वास्तविक में वे बुरे नहींहैं, वरन् वे बहुत लाभ-

दायक हैं जिनका हम सदू उपयोग नहीं जानते। जैसे यदि हम किसी एक गाड़ी का पाईया निकाल दें तो गाड़ीका चलना रुक जायगा और गाडी आगे जानेकी अपेक्षा वहीं गिर जावेगी। इसी प्रकार यदि हम अपने को सांसारिक जीवों से पृथक् समझें तो हमारा इस संसार में निभना दुर्लभ हो जावेगा।

यह कोई भी नहीं कह सका कि यदि प्रकृति में कुछ भिन्नता हो जावे तो वह भलाई के लिए होगी, और यदि टुक विचार कर देखा जाय तो यही प्रतीत होगा कि मनुष्य ही अपनी अज्ञानता के कारण अपने जीवनको दुःखदायी बना लेता है। हमारा अपढ़ रहना हमारे दुःखी रहनेका दूसरा कारण है। इसलिये हमें विद्या सीखने की बहुत आवश्यकता है। विद्या ऐसा धन है जिसे हम किसीप्रकार नहीं खोसकते, किसी कवि ने कहा है:—

"विद्याधन अनमोल है, कोउ न लेय बटाय।
जस२ दे तस २ बढ़े, चोर न सके चुराय" ॥

यह एक ऐसा पदार्थ है जो भांति २ के रत्नों से भी अधिक बहुमूल्य है। विद्या एक अद्भुत वस्तु है जो हमें अपन जीवन पर्य्यन्त हमारे कामों में सहायिका होती है। इसका अन्त पाठशाला से ही नहीं होता वरन् इसे हम सीखने के लिये बहुत प्रयत्न उठाते हैं। और यदि हम इसे जीवन समय से लेकर मरण पर्य्यन्त भी सीखें तो भी हमें इसकी थाह पाना दुर्लभ होगा। हमें इसे ग्रहण करने को इतनी आवश्यकता है जितनी कि हमें अपने स्वास्थ्य के सुधारने की है।

जब मनुष्य पर संकट आपड़ता है और उस से दुःखी हो भांति २ के संकल्प विकल्प उसके मन में उठते हैं, तब उसे यही विचार उत्पन्न होते हैं कि मनुष्य ही अपने कर्मों से अपने

जीवन को सुखमय अथवा दुःखमय बनाता है। इसलिए हमें इस भांति संसार में चलना चाहिए, जिससे हम अपनी जीवन-रूपी नाव इस समयरूपी अथाह समुद्रसे भली-भांति पार करसकें और इस पार लाने के लिए हमारी विद्या ही हमें सहाय देसकी है।

हमें अपने जीवन का एक तिनके से भी बढ़कर उपयोग करना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य का यही प्रण हो कि हम अपने२ जीवनमें सबसे बढ़कर प्रतिष्ठा का काम करें। इनके करने में मनुष्यको स्वार्थी न होना चाहिये क्योंकि स्वार्थ का फल प्रायः बुरा होता है। जैसे मुञ्ज ने अपने परमस्नेही भ्राता के पुत्र राजा भोज को राज्य के लालच वश हो अपना स्वार्थ साधने के हेतु मार डालने का प्रयत्न किया परन्तु उस के सब उपाय निष्फल हुए। इसलिये हमें परस्वार्थी होना और दूसरों का हितचिन्तन

करना अपने जीवन का मुख्यकर्तव्य समझना चाहिये, यही नहीं बरन् हमारे जीवन के कर्म ही दूसरों की भलाई के कारण होंगे।

हमें अपने जीवन में असह्य दुःख को भी स्वस्थ और शांतचित्त से सहन कर उसके दूर करने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए और अपनी ही भुजाओं का भरोसा रखना हमारे सुखी रहने का एक मुख्य कारण है।

हमें अपने जीवन को सुखी रखने के लिए इन्द्रियदमन की, पानी तथा वायु से भी बढ़कर आवश्यकता है। जिसके अभाव से साम्प्रत में इस भारतभूमि के स्त्री, पुरुष कईप्रकार के रोगों से पीड़ित पाए जाते हैं, हमें अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रखने की भरसक कोशिश करनी चाहिए, और यह ध्यान रहे कि हम इन्द्रियों के वश में न होजाँय। इनके वशीभूत होना ही हमारे दुःखों का बीज बोना है।

हमें यह पूर्ण विश्वास है कि हमें इस जीवन में दुःखोंका सामनाभी करना पड़ेगा क्योंकि यहएक प्रत्यक्ष प्रमाण है कि सूर्य का प्रकाश इस भूमंडल पर एकसा पड़ताहै, परन्तु इसमें भी कहीं२ छाया का अंश पाया जाता है अथवा यों कहिये कि गुलाब के वृक्ष में भी कांटे होते हैं। औरइस लिये इस जीवन से निराश न होना चाहिये॥

यह संसार एक नाटक शाला है और हमें इसमें अपने कर्मोंका ही खेल दिखलाना है। जिसने अपना खेल योग्यता और सफलता के साथ किया उसीका जीवन सफल समझना चाहिये। सौलोमन अपने पुत्रको पत्रद्वारा सूचित करता है-किमनुष्यमात्रका जीवन पर्यन्त सद्गुणी और पराक्रमी होनेका उपाय अवश्य करना चाहिए। यही नहीं। किन्तु दुष्टकर्मों के परित्याग करने ही में अपने जन्म को सफल समझना चाहिये।

❋ प्रकरण २ दूसरा ❋

आचरण

हमारे जीवन की सफलता हमारे आचरणों ही पर निर्भर है और इसीसे मनुष्य भला या बुरा कहा जासक्ता है। मनुष्य चाहे कितनाही बुद्धिमान् क्यों नहो पर यदि अच्छा आचरण नहीं है तो वह भला मनुष्य कदापि नहीं कहला सकता, और वह कदापि सुखी नहीं रह सकता। हम अपने आचरणों को चाहे जैसा बना सकते हैं परन्तु अच्छे आचरण रखने के लिए हमें अच्छी संगति की बड़ी आवश्यकता है, यही नहीं किन्तु हम अपने पूर्वजों तथा बड़े २ महात्माओं के जीवन, उनके व्यवहार, उनका रहन सहन देख कर भी अपने आचरण सुधार सकते हैं।

हमारे जीवन में यही एक मुख्य अमृत-

रूपी फल है जो हमें सरलता से प्राप्त होसक्ता है। बरन् बुरी २ संगति में पड़कर जो हमें अमृत समान जान पड़ती हैं उन विषय वासनाओं में पड़कर हम इसके पाने की चेष्टा नहीं करते।

हमें इस बात का भलीभांति ध्यान रहे कि यदि हमारा आचरण अच्छा नहीं है तो हम ही केवल इसके अपराधी न ठहराए जायँगे बरन् हमारे माता पिता और हमारे पूर्वजों पर इस का दोषारोपण किया जावेगा। और हमारी सन्तान भी हमारे ही तुल्य होगी।

इस लिए हमें सत्सङ्गति से कदापि मुख न मोड़ना चाहिए, यदि हमारा आचरण लोगों को रुचिकर नहीं है तो हमारे माता पिता ही नहीं बरन् हमारे इष्ट मित्र भी हमें हमारे सङ्कट में कदापि सहायता न देवेंगे और न लोग अपने पास बैठने देंगे। इस पृथ्वी के स्त्री पुरुषों

को ईश्वर ने इस सृष्टि में भेजने के पूर्व ही सब के मन, त्वचा, आंख, कान, नाक इत्यादि एक ही से दे रक्खे हैं। ईश्वर ने किसी एकको अच्छे तथा दूसरे को बुरे आचरण नहीं दिए किन्तु मनुष्य ही अपनी २ संगति से अपने को भला अथवा बुरा बना लेता है। हम बुरी संगति में पड़कर अपनी इन्द्रियों के वश में होजाते हैं। और इसकारण भांति२ के दुर्गुण सीख लेते हैं। जिस से हमें ही नहीं बरन् हमारे कुटुम्बीजनों को तथा सन्तान को असह्य दुःख सहने पड़ते हैं। यही नहीं किन्तु हम अपने दुष्कर्मों से मानवजाति को लजाते हैं।

— हमारे इस जीवन में जिन २ चीजों की आवश्यकता है उन में अच्छे आचरण की भी गणना है। हमें धनवान् होने की अपेक्षा, हमारे यश की अपेक्षा, हमारे स्वास्थ्य की अपेक्षा, हमें अपने आचरण उत्तम बनाये रखने की अधिक-

तर आवश्यकता है । हमें ऐसा काम कदापि न करना चाहिए ।जिससे दूसरे हमारा नाम धरें ।

हमें सदा न्यायी, सत्यवादी, सुशील, और मेहनती बनने का प्रयत्न करना चाहिए और सदा ऊँचे पद के प्राप्त करने की अभिलाषा रखनी चाहिये । क्योंकि यदि हम इस पद को प्राप्त करलें तो हम वे पदार्थ जिन का सुख भोग हम कर चुके हैं हमें अवश्य ही इसकी अपेक्षा तुच्छ जान पड़ेंगे यही नहीं किन्तु हमें इसके आगे बड़ी २ उपाधियां भी तुच्छ प्रतीत होने लगेंगी ।

इसी प्रकार जब हम किसी पर्वत पर चढ़ते हैं और एक श्रेणी चढ़ जाने पर हमें अपने सामने की दूसरी श्रेणी दृष्टि पड़ती है तो हमें उस पर भी चढ़ने की अभिलाषा उत्पन्न होती है और जब उसपर पहुंचते हैं तब तीसरी पर चढ़ने की अभिलाषा होती है और जबतक हम

उन सब श्रेणियों पर न चढ जांय और उस पर्वत की शिखा पर न पहुँच जांय तबतक हमारी अभिलाषा पूर्ण नहीं होती। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि कोई ऐसा पद अनुसंधान कर रक्खे जिसके प्राप्त किए विना सन्तुष्ट न हो। परन्तु हमें अपने अनुसन्धान किए हुए पद के प्राप्त करने में भी तरह २ की कठिनाइयाँ उठानी पड़ेंगी, जिन्हें देखते ही हमें निराश न होना चाहिए क्यों कि अच्छे २ कामों के करने में कई प्रकार की बाधायें पडती हैं।

ईश्वर ने इस संसार में मनुष्य का जन्म निरुद्यमी बैठे रहने के लिए नहीं दिया और यदि ऐसा ही होता तो हममें और चौपायों में कुछ भिन्नता न होती। इसलिए हमें कुछ उद्यम अवश्य ही करना चाहिये। हमें इस जीवन में विद्या उपार्जन करने में तरह २ के अनुभव प्राप्त करने म और कई एक प्रशंसनीय

काम करने में अपना समय व्यतीत करना चाहिए और ऐसा करने से हम अपने अनुसंधान किए हुए पदको सरलतासे प्राप्त कर सकेंगे, और हमारी जीवनरूपी गाड़ी के चलने में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ेगी।

मनुष्य को अपने२. कर्त्तव्योंको पूर्णरीतिसे करने में ही अपना पहिला लक्ष समझना चाहिए और तभी हम सच्चे कहलाए जा सकते हैं।

मनुष्य को सदा सच्चा और ईमानदार होना चाहिए। एक अंग्रेज विद्वान् का कथन है कि यदि विचार कर देखा जाय तो इस पृथ्वी पर झूंठ के बराबर कोई दूसरा पाप दृष्टि नहीं आता। और यही एक ऐसा पाप है कि जिसे मनुष्य सीखने का बहुत शीघ्र प्रयत्न करता है। मनुष्य चाहे कितना ही विद्वान् क्यों न हो और यदि उसमें झूठ बोलने ही का एक अवगुण है तो उसकी विद्वत्ता निरर्थक है।

ऐसे मनुष्य का समाज में निरादर होता है। इसलिए हमारी इस जीवनरूपी चादर की ऐसी रक्षा करनी चाहिये जिससे उसमें किसी प्रकार का धब्बा न लगजाय।

सत्यता और ईमानदारी ही मनुष्य मात्र के मुख्य आभूषण हैं। मैक्समूलर का कथन है।

" This is aboveall-to thine own self be true;
And it must follow, as the night the day;
Thou canst not then be false to any one.

कि सत्यता एक ऐसा गुण है जिसके प्राप्त करने में हमें इसप्रकार लगे रहना चाहिए जैसे दिन के अस्त होते ही रात उसके पीछे लगी रहती है। और इस के प्राप्त करने पर हम निःसन्देह किसी से झूठ नहीं कह सकते और न कोई हमें झूठा कहसकता है।

यदि हम दूसरों से अपनी आज्ञा का पालन कराना चाहते हैं तो हमें स्वतः आज्ञाकारी बनने की चेष्टा करनी चाहिए। यदि हमें कोई

अधिकार सौंप दिया गया, है तो हमें न्यायी, सुशील और मृदुभाषी बनने की अवश्य इच्छा हो। यह एक ऐसा गुण है जिससे मनुष्य ही नहीं बरन् ईश्वर भी हमारे आधीन होसकता है। यह एक ऐसा पदार्थ है, जिसका न तो हमें डंक लगता और न विषही चढ़ता है।

बरन् कटुवादी मनुष्य का विष एक ज़हरीले सर्प से भी बढ़कर है, जो हमारे मरणपर्यंत हमारा पीछा नहीं छोड़ता।

मनुष्य बुद्धिमान् होने ही के कारण आदर नहीं पाता बरन् सद्गुणी होने से ही आदर पाता तथा उसकी सब जगह प्रशंसा होती है। इसके अतिरिक्त उसके सद्गुण ही उसके मरने के पीछे इस संसार में उसकी कीर्ति के बढ़ाने में सहायक होते हैं। इसलिये हमें इस जीवन को इस प्रकार रंगना चाहिये जिससे हमारा जीवन हमें ही नहीं बरन् दूसरों को भी रुचिकर हो।

हम यह भलीभांति जानते हैं कि हम हरएक विषय में परिपक्क नहीं होसकते परन्तु हमें अपने आचरण में परिपक्क होने का लक्ष रखना अति लाभदायक है । हमें सदा इस बात का ध्यान रहे कि यदि हम अपने प्रति दूसरों का अच्छा व्यवहार चाहते हैं तो हमें चाहिये कि हम भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें और इतने पर ही हमें सन्तुष्ट न होना चाहिये । हमें सदा दूसरों को दया और आदर की दृष्टि से देखना तथा उनके लिये अपना जीवन अर्पण करने में किसीप्रकार का संकोच न रखना चाहिए ।

— हमें दूसरों की बुराई तथा उनका अहित न करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से उनका ही नहीं किन्तु हमारा भी नुक़सान होता है, जैसे हम यदि मधुमक्खी के छत्ते में ढेल फेंकें तो उनकी ही हानि न होगी साथही हमारी भी हानि

होगी और वेहमें हमारे बिना कदापि नछोड़ेंगी

हमें सदा प्रसन्नचित्त रहना चाहिए । क्रोध जो हमारे जीवन को नाश करने में सदा लगा रहता है, हमें कदापि न करना चाहिए ऐसा करने से हमारे बल की हानि होती है ।

❋ प्रकरण ३ तीसरा ❋

नीरोगी रहने से लाभ

हमें अपने जीवन को सुखी रखने के लिये और सदा नारोगी रहने के लिये स्वच्छता पर अवश्य ध्यान देना चाहिए । बहुधा लोग हैज़े व माता की बीमारी और कई प्रकार की बीमारियों से पीड़ित देखे जाते हैं । इसका एक मुख्य कारण हमारा मैले कुचैले रहने काही है । इसलिये हमें चाहिये कि हम सदा अपने २ घरों और नित्य व्यवहार की वस्तुओं को स्वच्छ रक्खें । हमारे घर जिनमें हमारा सदा निवास

रहता है हवादार रहना चाहिये । हमारे सोने तथा पहरने के कपड़े सदा साफ रहें । हमें नीरोगी रहने के लिए नित्यप्रति दो बार अवश्य स्नान करना चाहिये । ऐसा करने से हमारे शरीर के रन्ध्र जिनके द्वारा हमारे शरीर का मैल पसीने के रूप में बनकर निकला करता है और जिनके द्वारा हमें स्वच्छ वायु मिला करती है साफ होजाते हैं ।

हम बहुधा बुखार, पेट के दर्द, आंव इत्यादि कई रोगोंसे पीडित हुआ करते हैं । यह केवल हमारे भोजनके अप्रबंध का ही कारण है । हमें सदा हलके जल्द पचनेवाले पदार्थोंका सेवनकरना चाहिये । हमें सदा इसबात का ध्यान रहे कि हम भूख से ज्यादा कभी भोजन न करें, और भोजनान्तर शीघ्र ही किसी कार्य्य में न लगजावें । बड़े २ डाक्टर तथा वैद्यों का मत है कि मनुष्य को चाहिये कि भोजनान्तर अवश्य

कुछ देर आराम करें। कई एक विद्वानों का मत है कि हमें पेटभर भोजन न करना चाहिए, ऐसा करने से हमें आलस घेर लेता है और हमारा मस्तिष्क भी आलसी बना रहता है।

हमें चाहिये कि हम दिनभर परिश्रम कर अपनी थकावट मिटाने के लिए रातको अवश्य शयन करें। बहुधा मनुष्य रात २ भर जग कर नाच तमाशों में अपना समय बिताकर अपने जीवन को नष्ट कर लेते हैं और अनेक प्रकार के रोगोंसे पीड़ित हुआ करते हैं। यदि विचार कर देखा जाय तो प्रत्यक्ष यही जान पड़ेगा कि ईश्वर ने रात मनुष्य तथा दूसरे जीव जन्तुओं के विश्राम के लिय ही बनाई है और जिसका हम दुरुपयोग कर अपने जीवनसे हाथ धो बैठते हैं। हमें सदा यह ध्यान रहे कि हम उस जगत्पिता परमेश्वर की देनगियों को कदापि बुरे कर्मों में न लगावें। हमें सदैव दस

बजे के उपरान्त कभी न सोना चाहिये और सूर्य उदय होने के पूर्व ही उठकर नित्यकर्मों से निवृत हो अपने २ धन्धों में लगजाना चाहिये। विद्यार्थियों को चाहिये कि व सातघंटे से अधिक कदापि न सोवें।

हमें इसबात का ध्यान रहे कि हम रात्रि दिवस मानसिक परिश्रम ही न करते रहें ऐसा करने से हमारे शारीरिक बल बुद्धि में बाधा पड़ती है, और हम निर्बल होजाते हैं। इसलिए हमें अपने शारीरिक बल के बनाये रखने तथा उसकी वृद्धि के लिए व्यायाम की अधिक आवश्यकता है। हमें इसकी अपेक्षा स्वच्छ वायु के सेवन की भी अधिक ज़रूरत है।

हमें पुरानी पुस्तकों के पढ़ने से विदित होताहै कि हमारे पूर्वज मानसिक परिश्रम की अपेक्षा शारीरिक परिश्रम अधिक किया करते थे, और अपना समय स्वच्छ वायु के सेवन

करने में अधिक व्यतीत किया करते थे जिसका यह परिणाम होताथा कि वे केवल बलिष्ठ नहीं होते थे बरन् उनकी सन्तान भी बलिष्ठ हुआ करती थीं। हम यदि किसी लोहार या सोनार की भुजाओं को देखें तो उसकी भुजायें हमारी भुजाओं की अपेक्षा अधिक बलिष्ठ जान पड़ेगा।

स्वच्छ वायु के सेवन करने से हमारा मन सदा प्रसन्न रहेगा, और हमारी दिनभर की थकावट प्राकृतिक सौन्दर्य के देखने से ही हल-की प्रतीत होने लगेगी। हमें चाहिए कि हम प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल के समय स्वच्छ वायु सेवन करने के लिये अपने नगर तथा ग्राम के बाहर मील दो मील की दूरीपर जाया करें और प्राकृतिक सौन्दर्य का अवश्य अवलोकन करें। जिससे हमारा मनही प्रसन्न नहीं होता बरन् हम उसके अवलोकन से ही भांति २ की शिक्षायें पाते हैं। यथा हम अपने

नगर या ग्रामः से कुछ दूरी पर जावें जहां कि सुन्दर २ पुष्प आदि के वृक्ष लगे हुए हैं, और निकटही एक सुन्दर सरोवर भरा हुआ है, जिसमें भांति २ के पक्षी कलरव कर रहे हैं, कमल अपनी निराली छटा दिखला रहाहै इन सब को देखकर सरोवर के निकटवर्ती वृक्ष अपना २ सिर हिला रहे हैं, मानो प्रकृति के सौन्दर्यका आगमन कर रह हैं। यदि विचार कर देखाजाय तो हम इन सबके अवलोकन से यह शिक्षा पाते हैं कि हमभी ईश्वर की देनागयों का इसी भांति आगमन करें।

स्वच्छ वायुके सेवन से हमारे मानासिक तथा शारीरिक बल की वृद्धि होती है, हमारा मन सदा प्रसन्न रहा करता है। बहुधा मनुष्य एस भी देखे गए हैं जो सदा अपने घरोंमें ही रहना पसन्द करते हैं और येही बहुधा अशक्त तथा रोगी पाये जाते हैं।

हमारे इस संसार में जितने कार्य हैं हमारे

नीरोगी तथा उद्यमी होने सेही पूर्णताको प्राप्त हो सके हैं। यदि हम सदैव रोगग्रसित रहें तो हम अपने जीवन के लिए कुछ भी नहीं कर सके और हमारी सन्तान जो हमारी आशा के सहारे बैठी हुई है सदैव दुःखी रहेगी। साम्प्रतकाल में इस भारतवर्ष में मनुष्यों की अपेक्षा स्त्रियां जो गरीब हैं अधिक उद्यमी जान पड़ती हैं और उन्हें अपनी सन्तान की रक्षा करने की अधिक चिन्ता रहती है। वे सदा अपना समय प्रातःकाल से सायंकाल तक किसी न किसी प्रकार के उद्यम करने में व्यतीत करती हैं। कोई अपना समय पुतलीघरों में काम कर कोई खेतों में लूने तथा बोने का कामकर व्यतीत करती हैं और येही उन स्त्रियों की अपेक्षा जो अपने घरों में बैठी हुई हुकुम चलाया करती हैं बलवती तथा नीरोगी जान पड़ती हैं। इसीलिए स्वच्छ वायु का सेवन

मनुष्यों ही के लिये नहीं बरन् स्त्रियों के लिए भी लाभदायक है। और यही हमारे मन तथा शरीर क लिये एक अधिक मूल्यवान् औषधि है, जिसे हम सरलता से प्राप्त करसक्ते हैं। हम यदि नीरोगी रहना चाहते हैं तो हमें इस बातका अवश्य ध्यान रहे कि हम मादक वस्तुओं का सेवन कदापि न करें, क्योंकि इनके सवन से हमारा बल जाता रहेगा, हम सदैव रोगी बने रहेंगे। और हमारी आयु भी क्षीण होती जावेगी।

प्रकरण ४ चौथ

पुस्तकावलोकन

हमें पुराने इतिहास तथा अपने धर्म की पुस्तकें पढ़ने से विदित होता है कि भारतवर्ष में प्राचीनकाल में विद्या और कला का भांडार था और हमारे पूर्वज विद्या तथा कलामें बड़े निपुण थे। इसका केवल एक यही कारण है कि वे विद्यानुरागी ही न थे बरन् अपना समय अच्छे २ कामों में लगाते थे।

हितोपदेश के पढ़ने से हमें विदित होताहै कि हमारे सब धनों में से विद्या एकही बढ़कर धन है, इसे न कोई चुरा सक्ता है और दूसरों के देने से घट भी नहीं सक्ता, एक कवि की युक्ति है।

"सरस्वती के कोश की, बड़ी अपूर्वक बात।
"खरचे ते नित बढ़त है, बिन खरचे घटजात॥

इसलिये हमें विद्या के उपार्जन करने में ही अपना मन लगा देना चाहिये। यह एक मनुष्यमात्र का गुप्तधन है और यही विदेश में बन्धु के समान हमारी सहायिका होती है।

हमारा मूर्ख रहना मानों पशु के समान है और अपने २ हृदयों में बुराइयों का बीज बोना है, जैसे कि एक अंग्रेज विद्वान् ने कहा है कि "Ignorance is the mother of evil" हमें विद्या इस अभिलाषा से न सीखना चाहिए कि हम उस के सहारे से नौकरी कर अपना उदर पोषण करें

ओर द्रव्य उपार्जन करें वरन् यह ध्यान रहे कि हमारा जन्म केवल विद्या के उपार्जन में ही लगा रहे। वही मनुष्य इस संसार में सुखी रहसकता है जिसने ज्ञान प्राप्त करलिया है, क्यों कि यही हमारे सब धनों से बढ़ कर धन है जैसा कि एक अंग्रज विद्वान् ने कहा है कि

"Happy is the man that findeth wisdow,
And the man that getteth under-standing;
For the merchandise of it is better than the merchandise of silver".

विद्या केवल बालकों के लिए ही लाभदायक नहीं है वरन् बालिकाओं के लिए भी है। इस लिये हमें चाहिए कि जब बालक अपनी माता के उदर में पांच महीने का होजावे तभी से उसे शिक्षा देनी चाहिए। और यह माता को शिक्षा देने से बालक को भी प्राप्त होसक्ती है।

विद्या एक ऐसा गुण है जिसके बल से हमारे दूसरे गुणों की भी वृद्धि होती है। हम

अपने जन्म दिवस से ही विद्या सीखना आरम्भ कर देते हैं, फिर पाठशालाओं में जाकर इसका अध्ययन करते हैं, परन्तु यहां से ही इस का अन्त नहीं होता। यह जीवनपर्य्यन्त हमारा साथ नहीं छोड़ती हमें इस बात का अवश्य ध्यान रहे कि हम इस जीवन में जो कुछ सीखें सब ज्ञान से पूर्ण हों। प्रत्येक मनुष्य प्रायः दो प्रकार से ज्ञान प्राप्त करसकता है; एक तो वह है जो दूसरों से प्राप्त होता है, और दूसरा अपना स्वतः का ज्ञान। परन्तु हम जो कुछ अपने ही ज्ञान तथा अनुभव से सीखते हैं वह हमारे लिए अधिक लाभदायक है। हमें यह ध्यान रहे कि यदि हमने पाठशालाओं में रहते हुए भी सफलता प्राप्त नहीं की तो हमें निराश न होना चाहिए क्योंकि बहुधा ऐसा देखागया है कि जिन्हें पाठशालाओं में पढ़ने पर सफलता प्राप्त नहीं हुई उन्हें अपने भविष्य जीवन में अपने

धैर्य तथा परिश्रम के कारण अच्छी योग्यता प्राप्त हुई है। इससे यही स्पष्ट है कि मनुष्य अपने अनुभव से ही इस संसार में बहुत कुछ सीख सकता है।

इसलिये हमें चाहिये कि हम इस अभिलाषा से विद्या के उपार्जन करने में ध्यान दें कि मानों हमें इस संसार में सदैव के लिये रहना है और विद्याही एक हमारा परममित्र है। साथही हमें यह ध्यान रहे कि हमें एक दिन अवश्य मरना है इसलिये हम अपने जीवन को दूसरों का उपकार करने में लगावें।

यदि हम अपनी बाल्य अवस्थाही से सद्गुणों को सीखलें तो हमें यह समझना चाहिये। कि हम अपने जीवन संग्राम की पहली लड़ाई में सफलता प्राप्त कर चुके। हमें सदैव यह ध्यान रहे कि हम अपनी सन्तान को उन की बाल्य अवस्थाही से अच्छे २ उपदेश दिया

करें, क्योंकि यही समय है कि हम उन्हें जैसा चाहे वैसा बना सके हैं। जैसा कि कहा हैः-

"हरे वृक्ष की ज्यों छड़ी, मनमानी लच जाय'।
सूखेते नहिं लचत है, कोटिन करो उपाय ॥

परन्तु बड़े २ विद्वानों का मत है कि बालकोंको उनकी रुचिके अनुसार शिक्षा देनी चाहिये, जैसे यदि बालक की रूचि कविता में है तो हमें चाहिये कि उसे कवितासम्वन्धी पुस्तकों का अध्ययन करावें ऐसा करने से बालक अपनी रुचि के अनुसार उस विषय में परिपक्व होजाता है। जैसी कि अन्य देशों में प्रथा है।

विद्या का सीख लेना केवल भांति २ की भाषाओं का जानलेना ही नहीं है। वरन् कोई अन्य पदार्थ है जिसके पाने से हमें ज्ञान प्राप्त होता है, जो हमारे भविष्य जीवन में अधिक लाभदायक है। हमें इस बात का ध्यान रहे

कि हम पुस्तकों की अच्छी २ बातें, मनुष्यों के गुण, तथा उनके उपदेशों पर सदैव ध्यानदें।

यह प्रत्यक्ष जान पड़ता है कि विद्युत्शक्ति द्वारा हमारे कितने काम सुगमता से होते हैं, परन्तु हमारे ज्ञान तथा अनुभव की शक्ति इस से सुगम है जो हमारे दुःखों के मिटाने में लगी रहती है और हमारी कठिनाइयों को सुगम बनाती है। इसके प्राप्त करने पर सब पदार्थ सुखमय प्रतीत होते हैं।

ज्ञान एक ऐसी निसेनी है जिसका एक सिरा पृथ्वी पर और दूसरा आकाश की ओर है परन्तु उसे हम देख नहीं सके। यह वही निसेनी है जिसके सहारे इस भारतवर्ष के बड़े भविष्य- वक्ता और महात्मा अनन्तपदको पहुंच चुके हैं। इसलिये हमें चाहिये कि हमभी इन्हीं महात्माओंके अनुगामी बनें। अच्छीर पुस्तकों का पढ़ना और विचारवान् मनुष्यों की संगति

ही हमारे सुख तथा ज्ञान प्राप्त करने का एक सुगम मार्ग है।

एक महात्मा का कथन है कि—हमारा मस्तिष्क अच्छे२ विचारोंका मन्दिर है। वह उस परम-पवित्र आत्मा के रहने के लिये एक सुन्दर महल है। हम उसके कारीगर हैं। इसलिये हमें चाहिये कि हम इस महलकी ऐसी रक्षा करें जिससे सदैव के लिये दृढ़ बना रहे। इसे दृढ़ रखनेके लिये हमें अपने सद्गुणोंकी 'करनी' सदैव अपने साथ रखना चाहिये। और इतनेसे ही हमें सन्तुष्ट न होना चाहिये। हमें इस महलके चहुंओर उसकी शोभा बढ़ानेके लिये तथा इस में निवास करनेवालों के आनंदके लिये ज्ञान-रूपी पुष्पवाटिका अवश्य लगा रखनीचाहिये। परन्तु हमयह सब करनेके पूर्वही अपनी जीवन-रूपीवाटिका को सुधारने में लगे रहें, जिसका सुधारनाही हमारे सुखों का मुख्यकारण है।

परन्तु इन सबके करनेके लिये हमें पुस्तका व-लोकनकी अधिक आवश्यकता है। हमें पुस्तक-सेही अधिक प्रेम होना चाहिये, इसलिये हमें सदा अच्छी २ पुस्तकों के पढ़ने तथा उनके गुण और उपदेश ग्रहण करने में अपना समय व्यतीत करें। पुस्तकों कोही हमें अपना परम-गुरु समझना चाहिये जो हमें बिना मारेपीटे, बिना क्रोध किये, भांति२ की शिक्षायें देती हैं। यदि हम इसका पाठ भूलभी जाते हैं, तो ये हमें न मारती न गाली देती है। और न हमारी मूर्खता पर हंसती है।

इसलिये हमें चाहिये कि यदि हम सत्यको, अपने जीवन के सुखों को, विज्ञानशास्त्रके ज्ञानको, और अपने २ धर्मविषयक ज्ञानको प्राप्त करनेकी आन्तरिक इच्छा रखते हैं तो हमें पुस्तकों का मनन अवश्य करना चाहिये। जैसा कि "सौदी नामक एक प्रसिद्ध अंग्रेज कविने कहा है।

[१]

*My days among the dead are past;
Around me I behold,
Where'er these casual eyes are cast,
The mighty minds of old ;
My mever failing friends are they,
With whom I converse day by day.
मृतपुरुषों के सँग सर्वदा दिन मेरे नित जाते हैं ,
जहां देखता वहां पुराने पण्डित मुझे लखाते हैं ।
मेरे परममित्र : वे उनसे दूर नहीं मैं जाता हूं .
प्रतिदिन मैं उनसे ही बातें करने में सुख पाता हूँ ॥

[२]

*With them I take delight in weal
And seek relief in woe ;
And while I understand and feel
How much to them I owe ;
My cheeks have often been bedew'd
With tears of thought-ful gratitude.
सुख में उनकी ही संगति से सुख मेरा अधिकाता है ,
दुख में उनके आश्वासन से खेद दूर होजाता है ।
इन सबके कृत-उपकारों का स्मरण मुझे जब आता है ,
अश्रु-बिन्दुओं से कपोलदल गीला हो हो जाता है ॥

[३]

*My thoughts are with the dead ; with them
I live in long past year,

Their virtyes love, their faults condemn,
Partake their hoper fears,
And from their lessons seek and find,
Instruction with an humble mind.

सुधि उनकी कर, साथ उन्हींके पूर्व-काल में रहता हूं ,
कर उनके गुण गान, अवगुणों को मैं दूषित कहता हूं ।
उनके भय, उनकी आशायें बांट सभी मैं लेता हूं,
बन विनम्र, उनके चरितों से मन को शिक्षा देता हूं ॥

[४]

*My hopes are with the dead anon,
My place with them will be;
Aud I with them shall travil on
Through all futurity;
yet leaving here a name, I trust.
That will not perish with the dust.

मृत विद्वानों ही से मुझको, आशा उनपरही विश्वास ,
उनकी ही सङ्गति से मेरा होगा अन्त चिरन्त निवास ॥
उनका ही सहचर भविष्य में बन, मैं समय बिताऊंगा ,
आशा है अविनाशी यशमें छोड़ विश्व में जाऊंगा ॥

यह सबको विदित है कि हमें इस असार संसार से एकदिन अवश्य चला जाना है परन्तु हमारे साथ,हमारा धन हमारी स्त्री,हमारे कुटुम्बीजन,हमारे मित्र और यह वसुधा कदापि न जावेगी यह सब हमारे जीतेतक साथी हैं और

नोट-यह कविता जनवरी १९०८ की सरस्वती से लीगई है ॥

यदि विचार कर देखा जाय तो हमारा शरीर भी हमारा साथ न देगा। हमारी स्त्री हमारे मरनेपर जो हमारे हरएक कामोंमें सलाह देती है, रोती हुई हमारे शवके साथ घरके द्वार तकही साथदेगी। हमारे पुत्र तथा मित्र इत्यादि हमारा श्मशान तक ही साथ देंगे, हमारा धन यदि हमारे पुत्र अधर्मी तथा कुचाली हुये तो नाश हो जावेगा और हमारा तन मरघटमें जलकर राखहो रहेगा, अर्थात् हमारे साथ कुछभी न जावेगा परन्तु हमारा ज्ञान और हमारे सत्गुण ही हमारा साथ देंगे। इसलिये हमें ज्ञान प्राप्त करने के लिये पुस्तकावलोकनकी अधिक आवश्यकता है। पुस्तकों के पढ़ने से हमें अपनी जातिभर तथा कौमका पूरा२इतिहास, प्राचीन-काल की कला और विज्ञानशास्त्र, का साम्प्रत-काल के नये २ आविष्कारों का और प्राचीन-

काल के बड़े २ महात्माओं का ज्ञान, विद्या उनका अनुभव और उनके उपदेश विदित होतेहैं। इसलिए हमें चाहिये कि हम अपना समय व्यर्थ न जाने दें।

पुस्तकों के पढ़ने तथा उनपर विचार करनेसे हमारा मन अच्छे २ विचारों का एक सुन्दर महल बन जाता है। यदि हमारा मन किसी पुस्तक में नहीं लगता तो हमें यह न समझना चाहिये कि यह पुस्तक का दोष या उसकी भाषा का दोष है, यह केवल हमाराही दोष है, कि हम पुस्तकों का पढ़ना नहीं जानते। जब हम किसी पुस्तक को पढ़ें तो हमें उसे कहानी तथा उपन्यास की भांति न पढ़ना चाहिये, परन्तु हमें ध्यान रहे कि हम जो कुछ पढ़ते हैं नित्यप्रति के व्यवहार में लावें और उसके उपदेशों से अपने अवगुणोंको सुधार और उनका भलीभांति अध्ययन करें।

"यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्" ।

हमें पुस्तकों का प्रेमी बननाही एक अपना मुख्यकर्तव्य समझना चाहिए, जो हमें भांति २ के उपदेश दिया करते हैं, जैसे यदि हम रामायण को पढ़ते हैं तो हमें भाई२ की प्रीति भाई भौजाई की प्रीति, तथा इन सबोंका आपस का व्यवहार अच्छीतरह से विदित होता है-यही नहीं बरन् प्राचीनसमय की राज्य-शासनप्रणाली का ज्ञान तथा और तरह २ के उपदेश मिलते हैं ।

संसार परिवर्तनशील है । जो कल था सो आज नहीं है। बड़े२ नामी मनुष्योंका नामही नाम रहगया, और विशाल इमारतें धूल में मिलगईं, परन्तु उत्तम पुस्तकों के विचार, उन के जिनका कि निर्माण हज़ारों वर्ष पहले हुआ था, आज उसी सफाई और तेजीके साथ मानों किताब के पन्नों में से झांकरहे हैं और

अपनी उत्तम, लेखशैली का नमूना दिखलारहेहैं।

पुस्तकें क्या हैं ? ये भले विचारों के संग्रह के सिवा और कुछ भी नहीं है। इन्हें पढ़ने से वे सब विचार एक तरह अपने चित्त पर अङ्कित होजाते और धीरे २ हमारे मनको अपने अधिकार में कर लेते हैं। ये एक बढ़िया मित्र के बराबर हैं, और विपत्ति में हमारा पूरा साथ देती हैं। जवानी में हम सबका आनन्द और उत्साह देती हैं एवम् बुढ़ापे में शांति और धैर्य।

अपने जीवन को अच्छे रास्ते पर लाने के लिए उत्तम जीवनचरित्रों का पढ़ना बहुत जरूरी है। चित्त को एकाग्र करने के लिए गणित और दर्शनशास्त्र हितकर हैं मानसिक उत्कर्ष के लिए कविता पढ़ना आवश्यक है।

पुस्तकों का पढ़नेवाला किसी समय भी अकेला नहीं रहता, क्योंकि पढ़े हुए उत्तम २ विचार सच्चेमित्रों की तरह हरवक्त उसके

साथ रहते हैं। और उसके मन को बुरे विचारों से बचाते हैं।

प्रकरण ५ पांचवां।

स्वदेशानुराग-

यह तो संसारका नियम है कि बालक जन्म लेते ही अपनी माता को पहचानने लगता है, जो उसका जन्मदिवस से ही पालन पोषण करती है, और अपने बालक के स्वास्थ्यको उत्तम बनाए रखनेके लिये अपना आराम छोड़ देती है, उसके लिये भांति२ की चिन्ताएँ किया करती है। केवल इसी आशासे कि मेरा बालक बड़ाहोगा और मैं उसकी खुशीमें आनंद मनाऊंगी उसका व्याह देखूंगी और मुझे मेरी वृद्धावस्थामें मेरा बालक मेरी सहायता करेगा इत्यादि अनेक कल्पनायें करती है, और उसका लालन पालन कर उसे बड़ा करती है। परन्तु ज्यों २ बालक बड़ा होताजाता

है त्यों२ उसकी आशायें भी बढ़ती जाती हैं। जब बालक बोलने लगता है तब उसकी भोली तुतलाती हुई बातोंको सुनकर अतिआनंदित होती है और अपने जीवन को सुफल समझती है। वही नहीं किन्तु पड़ोसी इत्यादि भी बालक की तोतली वाणी को सुनकर आनंदित होते हैं, और उसकी बड़ी सराहना करते हैं।

इसीप्रकार हम इस भारतभूमि की सन्तान हैं, हमें सदैव इस बात का ध्यान रहे कि हम अपनी माता को जिसने हमें इतना बड़ा किया और हमें सदैव अपनी गोद में खिलाती है असन्तुष्ट न होनेदें। हमें अपनी माता की आज्ञा अवश्य पालन करनी चाहिए। हमारे स्वदेश-भक्त होनेसेही हमारा कल्याण तथा हमारे भाई वन्धुओं का और हमारे देशवासियों का भी कल्याण समझना चाहिए। हमें सदैव यह ध्यान रहे कि हमारे देशभक्त होनेसेही हमारी

इस परमपवित्र जननी भारतभूमि की केवल प्रसन्नता न होगी वरन् दूसरे देशवासी भी हमारी सराहना करेंगे और हमें आदर की दृष्टि से देखेंगे, यहांतक कि अपना प्रियबन्धु समझने लगेंगे।

यह तो सब को विदित है कि जब बालक दुराचारी होता है तब लोग उसेही नाम नहीं धरते वरन् उसके पिता माता को भी नाम धरते हैं, इसलिए यदि हम चाहें कि हमारी भारत-भूमि को कोई नाम न धरे तो हमें चाहिए कि हम स्वदेशभक्त हों। और सदैव अपने भाई बन्धुओं की सहायता करते रहें।

पुराने इतिहास के पढ़नेसे विदित होता है कि इस पृथ्वी पर यह एक हमारी भारतभूमि ही है जिसका वैभव आजतक देदीप्यमान हो रहा है, यह वही भूमि है, जिसकी विद्या और कलाकी आजतक इस भूमण्डल में प्रशंसा हो रही है, इसलिए इन सबके चिरस्थायी रखने

के लिए तथा इनकी उन्नति के लिए हमें चाहिए कि ऐसा उद्योग तथा परिश्रम करें कि इस भारतभूमि की कीर्ति सदैव बढ़ती रहे ।

परन्तु हमें अब यह सोच लेना चाहिए कि हम किसभांति इस भारतभूमिकी सेवा तथा अपने भाई बन्धुओं की सहायता करसक्ते हैं ।

हमारे देशकी उन्नति नगरों में बड़े२महल्ल इत्यादि बनवाने से नहीं होसक्ती, और न देश की शोभा ही बढ़ती है । यदि हम कहें कि हमारे देशकी उन्नति नित्यप्रति गरीबोंको भोजनदान देने से होगी सोभी वृथा है, ऐसा करने से हमें यह न समझना चाहिए कि हम देशकी सेवा कररहे हैं परन्तु यह ध्यान रहे कि हम उन्हें उद्यमी बनाने की अपेक्षा उनकी भुजाओं पर कुल्हाडी मारते और उन्हें आलसी तथा निरुद्यमी बने रहने के लिये उत्तेजित करते हैं ।

साम्प्रतकालमें बहुधा यह देखने तथा सुनने

में आता है कि बड़े २ धनी ,जो इसभांति गरीबों को भोजन देते हैं , जिसका यह परिणाम होता है कि वे भोजन पाकर सड़कोंमें निठल्ले फिरा करते हैं और उद्यम करने से मुँह मोड़ते हैं। हमें यह ध्यान रहे कि हम यदि धनाढ्य हैं तो हमें चाहिये कि हम अपने भाई बन्धुओंके लिए जो अपना जीवन इसभांति व्यतीत करते हैं नानाप्रकारके कार्यालय स्थापित करें जिनसे इनका उदर-पोषण भलीभांति से होसके । हमें दूसरे देशों के इतिहास पढ़ने से विदित होता है कि वहां के निवासी उद्यमी ही नहीं बरन् अपने देशवासियोंकी सहायता करने में तन, मन, और धन अर्पण कर देते हैं । हमें अमेरिका तथा इङ्गलैंड के समाचारों से विदित होता है कि वहां के लोग अपने बन्धुवर्गोंके लिये जो दरिद्री हैं और जो अपना उदरपोषण नहीं करसक्ते भांति २ के कार्यालय खोल रक्खे हैं, तथा अंधे बहरे

लूलों के लिये भी इसी प्रकार का प्रबंध किया है।

हमें इस बात का ध्यान रहे कि हमारे कार्यालय स्थापित करनेसे हमारे बंधुवर्गों की ही सहायता न होगी बरन् हम अपने देश की वस्तुओं का जो कि हमें सस्ते प्राप्त होसकेंगी उपयोग कर सकेंगे।

हमें यह जानलेना चाहिए कि हमारा सुखी अथवा दुखी रहना हमारे देशवासियों के सुखी अथवा दुखी होने पर निर्भर है, और इस कार्य्यकी सफलताके लिए हमें एकताकी अधिक आवश्यकता है। इसलिए हमें चाहिए कि हम आपसमें एक दूसरे को प्रीति की दृष्टिसे देखें, चाहें हिन्दू हो या मुसल्मान और एक दूसरे को सहायता करने में तत्पर हों।

हमें ग्रीस के इतिहास से विदित है कि वहां के रहनेवाले कैसे देशसेवी और उद्यमी थे। वहांके नर नारी देशसेवाके लिए उद्यत

रहते थे कि वक्त आ पड़ने पर अपने प्रिय कुटुम्बियों को त्यागने में कुछ भी भय नहीं समझते। एक समय की बात है, जब कि ग्रीस में बहुत अत्याचार फैला था और वहां का बादशाह उन अत्याचारों के कारण अपने जीवन को कुशल नहीं समझता था। सदैव अपनी रक्षा की चिन्ता में निमग्न रहता था।

एक दिन अपने किसी मित्र से पूछा कि सब से प्रबल और प्रतापी बादशाह कौन था इसने उत्तर दिया कि वही बादशाह जिसकी कांसे की मूर्त्ति अबतक विद्यमान है, यह सुनकर बादशाह सहम गया और रोमांचित होउठा और इसके मार डाले जाने की आज्ञा दी। यह मित्र सिराक्यूस का रहनेवाला था, इसने बादशाह से कहा कि मुझे चार दिन की मुहलत दीजावे. ताकि मैं अपने कुटुम्बियों को देख आऊं बादशाह ने कहा कि तुम किसी एक ऐसे आदमी

को अपने बदले में देजाओ जो तुम्हारे न आने पर मरने के लिए तैयार हो। भाग्य से वहीं पर एक और सिराक्यूस का रहनेवाला इन सब बातों को सुनरहा था वह उसी समय आ उपस्थित हुआ और बादशाह ने इसको छुट्टी दी। घर जाकर इसने सब वृत्तान्त कहा। इसके कुटुम्बीजनों ने इतना कोलाहल मचाया कि वहांसे नियत समयपर उसका वापस आना कठिन जान पड़ने लगा। अन्त में वह जब कि नियत दिन निकट आ पहुंचा तब अपने कुटुम्बी जनों को रोता छोड़ दौड़ा हुआ बादशाह के पास पहुंचा इस समय इसके मित्र को फांसी पर जाने के लिए केवल तीन मिनट ही बाकी रहे थे। इसको देखकर इसका मित्र प्रफुल्लित हो उठा। बादशाह ने यह देख इनके साहस तथा आत्मसमर्पण की बड़ी प्रशंसा की और दोनों को मुक्त कर दिया।

इसीप्रकार के कई एक दृष्टान्त पाए जाते हैं। इस देश में यह प्रथा है कि जब कोई आदमी लड़ाई के लिए जाता है तब उसके प्रेमी कुटुम्बीजन उसे लड़ाई में जाने से नहीं रोकते और यह कहकर उत्तेजित करते हैं कि यदि लड़ने जाते हो तो जीत कर आना अथवा मरे हुए, लेकिन अपना डरपोक सा मुंह लिए स्वदेशियों की मरने तथा अपने शत्रुओं की बहादुरी की कथा सुनाने न आना। हममें यह साहस कहां, कि हम यह सब सुनसकें। इसी प्रकार "होरेशस" नामक एक देशसेवी की भी कथा है इसने अपने देश के बचाने में इतनी बहादुरी दिखलाई कि लोगों का मन प्रेम से उमड़ उठा।

इसप्रिकार यदि हम और देशों के इतिहास देखें तो हमें कई एक अच्छे २ दृष्टान्त मिलेंगे। यदि भारतवर्ष का पुराना इतिहास

देखा जाय तो अवश्य ही अच्छे २ और इन से भी बढ़ दृष्टान्त मिलेंगे। हरदौल, शिवाजी, महारानी लक्ष्मी बाई, राना प्रतापसिंह इत्यादि सबों ने अपने स्वदेश प्रेमही के लिए अपने प्राण त्याग दिए हैं। और जिन्हें लोग आज तक देवतों की तरह पूजा किया करते हैं। इसलिए हमें भी इनकी तरह अपने सुखों को, अपने देशवासियों के सुखके लिए और अपने देशकी कीर्ति बढ़ाने के लिए त्याग देने पड़ेंगे।

❀ प्रकरण ६ छठवां ❀

द्रव्य और उसका उपयोग।

मनुष्य को जब लालच अधिक सताती है तब यही लालच द्रव्यका रूप धारण करलेती है अर्थात् मनुष्य तभी द्रव्यकी अधिक लालसा करने लगता है। बहुधा कई मनुष्य ऐसे भी देखे जाते हैं जो किसी प्रकार का उद्यमही

नहीं करते हैं, और यही सोचा करते हैं कि किसी प्रकार बिना उद्यमही के द्रव्य हमारे पास आकर हमारी सहायता करे। बस इसी तरह कई प्रकार के विचारों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। वे इस चिन्ता में इतने निमग्न हो रहते हैं कि उन्हें संसार का कुछ ज्ञानही नहीं रहता। परन्तु बहुत ऐसे भी मिलेंगे जो अपने जीवन को सुखमय व्यतीत करने के लिये तरह २ की कलाओं को सीखतेनए २ आविष्कार करते तथा कई प्रकार के उद्यम करने में लगे रहते हैं। इससे केवल इनके द्रव्यकी ही उन्नति नहीं होती वरन् देशकी और उनके जाति भर की उन्नति का कारण होती है। इसतरह से वे अपने जीवन को सुखमय बना लेते हैं॥

अब हमें यह जानलेना चाहिए कि द्रव्य की हमें क्यों ज़रूरत होती है। और जिस

मनुष्य का जन्म किसी धनाढ्य के यहां हुआ तो वह उस धन का सुख भोग कर सका है या नहीं ? निःसंदेह द्रव्य के उपार्जन में हमें अधिक चिन्ताएँ तथा परिश्रम उठाना पड़ता है।

द्रव्य चाहे थोड़ा क्यों न हो परन्तु हमारे जीवन को सुखी रखने के लिए एक अद्भुत् वस्तु है। किन्तु यह तब संभव है जब कि तुम स्वयं इस द्रव्य के अधिकारी होओ, न कि द्रव्य ही ने तुम पर अपना अधिकार जमाया हो॥

निःसंदेह द्रव्य के आधीन होना ही हमारे नाश का मूलकारण है। मनुष्य जो द्रव्य-हीन हैं वे भी कुछ द्रव्य की अभिलाषा रखते हैं परन्तु जो द्रव्यमय हैं वे इसको अच्छे कामों में व्यय करने की अपेक्षा, अधिक द्रव्य संचय करने की आकांक्षा रखते हैं। जैसे कि शराबी शराब पीने परभी अधिक पीने की इच्छा

प्रकट करता है। पर यह सब उस समय होता है जब कि मनुष्य ने द्रव्य देखकर अपनी आत्मा तृप्त करने के हेतु इसका संचय किया हो। ऐसेही मनुष्यों का जीवन इस वसुधाके लिए एक बडा भारी बोझा समझना चाहिए।

यह एक ऐसी वस्तु है जिसे हम सुरक्षित नहीं रख सक्ते। यद्रि हम इसकी रक्षा करनी चाहते हैं तो हमें ऐसे २ उपकार के काम कर दिखाना चाहिए जो दूसरों को भले लगें तथा जिनसे दीन दुखियों का लाभ हो। यदि हमारे पास अधिक द्रव्य है तो हमें चाहिए कि हम दीन बालकों के लिये जिन्हें इस समय पढ़ना दुर्लभ होगया है (Scholership) छात्रवृत्ति खोल दें। तथा उन बालकों के लिए जो अनाथ हैं, जिन्हें इस संसार में रहना दुष्कर जान पड़ता है अनाथालय खोल दिए जायँ जहां पर इन्हें भोजन तथा वस्त्र और पढ़ने की पुस्तकों का यथोचित प्रबन्ध कर दिया जावे ॥

हमें सदैव ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे हमारे द्रव्य की भी उन्नति होती रहे और इस देश के दीन दुखियों का भलीभांति पालन हो सके। यदि हम इस द्रव्य को ऐसे २ कामोंमें लगाने की अपेक्षा नाच, तमाशों में व्यय करें तो हम भांति २ के रोगों से पीड़ित होकर इस संसार से जल्दी विदा होजावेंगे। एक विद्वान्का कथन है कि द्रव्य का ढेर रखना मानो अपने शिर पर आपत्तियों का बादल मढ़ा लेना है।

मनुष्य को जब द्रव्य किसी प्रकार अनायास हाथ लगजाता है, उसे इसका ध्यान नहीं रहता कि इस द्रव्य के उपार्जन में कितनी कठिनाई तथा परिश्रम लगा होगा और वह बिना विचारे ही व्यर्थ व्यय करने लगता है मनुष्य के पास जब द्रव्य अधिक होता है तब ऐसे २ मित्र भाई बन्धु आ पहुंचते हैं जिनका उसे स्वप्न में भी ध्यान न हुआ होगा। और येही इस द्रव्य के भागी होते

हैं और बुरे कामों में लगाते तथा अपने जीवन को नष्ट करते हैं। मनुष्य जब धनहीन होजाता है तब उसके वही मित्र शत्रु का काम करने लगते हैं जो उस बंधु से भी प्यारे जान पड़ते थे। ऐसी अवस्था में मनुष्य को संसार अंधकारमय जान पड़ता है और वह स्वयं आत्मघात करनेको तत्पर होजाता है।

द्रव्य के पातेही हमें घमण्डी न होना चाहिए, यह सब पर विदित है किमनुष्य धन पाकर मतवाला होजाता है और ऐश आराम में ऐसा निमग्न हो रहता है कि अपने कुटुम्बी जनों का जरा भी विचार नहीं होता। नीतिमें कहा है कि धनमद, राजमद, ऐसे विलक्षण पदार्थ हैं, जिनके पातेही मनुष्य स्वभावतः घमण्डी होजाता है, और दूसरोंपर अत्याचार करने लगता है, कहाभीहै।

कनक कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाय।
यह खाए बौरात है, वह पाये बौराय॥

हमें इस बातका अवश्य ध्यान रहे कि विद्या तथा धन पाकर सदैव नम्र रहें, और दूसरोंकी भलाई परही हमारा लक्षहो, जिससे हमारी कीर्ति ही नहीं किन्तु हमारे पूर्वजों की कीर्ति भी अटल बनी रहे। द्रव्य से हमारे कठिन से कठिन काम सुगमता से हल हो-सक्ते हैं। हम यह नहीं कहसके कि द्रव्य की हमें कब ज़रूरत पड़ेगी इसलिए इसका भविष्य के लिये संचय कर रखना अति लाभदायक है। यात्रा में हमें इसकी अधिक ज़रूरत पड़ती है। हमें प्रायः घरके हरएक कार्य्य के करने में इसकी आवश्यकता होती है। इस लिए हमें चाहिए कि हम आमदनी से ज्यादा खर्च न करें, जिससे कि हमें दूसरों से कर्ज़ लेना पड़े, और उनसे दबे रहने का अवसर पड़े।

बहुधा यह देखने में आता है कि लोग जो धनी हैं इन सब बातोंका विचार न कर अ-

पने सुख चैन में सब धन व्यय करदेते हैं तथा दूसरों से कर्ज़ लेकर अपने पुत्रों तथा कुटुम्बीजनों पर आपत्ति का पहाड़ रख मर मिटते हैं, जिसके कारण इनका जीवन एक नया दृश्य धारण कर लेता है। जिससे इन्हें खाई रोटी नहीं पचती अर्थात् सदैव इससे छुटकारा पाने की चिन्ता में अपना जन्म व्यतीत करदेते हैं॥

इसलिए हमें चाहिए कि हम इसे हर प्रकार से व्यय करें जिससे हमारे कुटुम्बी जन जो केवल हमपर निर्भर हैं दुःख न पावें, और भविष्यमें आनन्दसे रहसकें। इन सबके करनेके लिये हमें नित्यप्रति आय व्यय का हिसाब लिख रखना चाहिए इससे हमजान सके हैं कि हमारा धन किन २ अच्छे कामोंमें लगा और कितना धन बुरे कामों में फुज़ूल खर्च हुआ॥

द्रव्य एक ऐसा पदार्थ है जिसे हमारे आचरण को बिगाड़ने में हमें ढूंढने का परिश्रम नहीं उठाना पड़ता। इसलिये हमें हमारे द्रव्यमय होने पर भी ऐसे अच्छे आचरण रखने चाहिये, जिनका अन्यान्य पर उत्तम प्रभाव पड़े ॥

❀ प्रकरण ७ँ सातवाँ ❀

समय

हमें अब इस विषय पर ध्यान देना चाहिए कि हम इस जीवन का कितना समय अच्छे और कितना बुरे कामों में खर्च करते हैं। इन सबके जानने के लिए एक (Diary) दिनचर्या बना रखनी चाहिए, इसके देखते ही हमें जान पड़ेगा कि हमने आज कैसे २ उपयोगी काम किये, और कितना समय हमारा बुरे कामों में नष्ट हुआ है। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि

एक दिन, पल, घड़ी इत्यादि हमारे इस जीवन का एक हिस्सा है एक विद्वान् का कथन है कि "Each day is a little life" अर्थात् हरएक दिन भी हमारे इस जीवन के तुल्य है, मनुष्य का जीवन उसकी कीर्ति, उन्नति और अवनति इत्यादि समय पर ही निर्भर है।

समय पवन से भी तेज भागनेवाला है। यह एक अमूल्यरत्न है, और सब सांसारिक, चीज़ों से कहीं बढ़कर है। जो मनुष्य समय वृथा गवांता है, वह वास्तव में अपने जीवन को नष्ट कर रहा है। वृथा समय गवांने से यह मतलब नहीं कि दिन रात ही तुम काम में लगे रहो। यह आशय कभी नहीं है। जीवन का मुख्य उद्देश यहहो कि काम के साथ खेल कूद और मेहनत के साथ आराम अवश्य होना चाहिए। जिसने अपना समय रातदिन काम करने में लगाया है, आराम का नाम तक नहीं मालूम,

सचमुच वह अपना जीवन नष्ट कर रहा है। वह इस संसार में ७५ और ८५ वर्ष की जगह ३० या ३५ वर्ष ही में अपना जीवन-दीप समाप्त कर देगा।

विहार उचित खेलों और क्रीड़ाओं का स्वीकार परन्तु अनाचार व मिथ्या सुखका बहिष्कार, आवश्यक विश्राम के साथ स्वास्थ्य को बढ़ाता, और मनुष्य की शक्ति को नष्ट नहीं होने देता। जीवन वह प्रशंसनीय है जो लंबा न होने पर भी अच्छे २ कामों से युक्त है। आदमी अपनी छोटी अवस्था में बहुत कुछ करके संसार को चकित कर सक्ता है। एक विद्वान् ने लिखा है, "कि मुझे यह देखकर आश्चर्य मालूम होता है कि उस छोटेसे समय के अंशको, जो हमारे जीवन का एक अंश है, मनुष्य क्यों कर उस आलसी बैठे हुए बुरे कामोंमें लगाता है"। समय के मूल्य को समझो और ऐसा उपाय करो कि

एक पल भी वृथा न जाने पावे। जैसे किसी फूल की एक पखुरी के अलग होजाने से उस की शोभा नष्ट होजाती है, इसीप्रकार एक घंटे में से यदि एक मिनट भी व्यर्थ जाने दें तो यह समझना चाहिये कि हमारा सब समय नष्ट हो चुका।

मनुष्य जो अपना एक पल भी व्यर्थ नहीं जाने देता और यदि कुछ समय नष्ट होता है, तो उसके लिये बड़ा पश्चात्ताप करता है, निःसन्देह बुद्धिमान् है।

आलसी मनुष्य बहुधा यही कहा करते हैं कि हमें अमुक काम करने के लिए समय नहीं मिला, परन्तु यथार्थ में यदि देखाजाय तो मनुष्य जो कुछ करना चाहे उसके लिए सुगमता से समय बचा सकता है। हमें हमारे कामों को पूर्ण करने के लिए, समय बाधा नहीं डालता परन्तु हमारी अन-इच्छा और आलस्य ही उसे पूर्ण होने से रोकती है।

हमें जो अपने काम के समाप्त होने पर समय मिलता है उसे हम व्यर्थ न जाने दें वरन् हमें चाहिए कि उस बचे हुए समय को और किसी दूसरे कार्य्य में लगावें। समय एक ऐसा अद्भुत् पदार्थ है कि यदि हाथ से निकल गया तो पछताना ही पड़ता है। जैसे किसान अपने खेतों को ठीक समय आनेपर नहीं बोता फिर अपनी हीन फसल को देखकर चिन्ता करता है। ठीक ऐसाही हमारा समय से सम्बन्ध है।

आलस्य ही हमें अच्छे २ बहुमूल्य कर्म करनेसे रोकता है। और इसके त्यागने से ही हमारा जीवन सार्थक होसकता है अन्यथा नहीं।

चेस्टर फील्ड—अपने पुत्र को सूचित करता है "कि समय बड़ा मूल्यवान् है, उसका व्यर्थ जाने देना मानों अपने कर्म, गुण, ज्ञान और आयु का क्षीण करना है।"

रिचार्ड—कहता है कि "मैंने पहले समय नष्ट

किया, कारण कि मैं उसके लाभ और गुणों से अनभिज्ञ था। और अब वही समय मुझे नष्ट कर रहा है"।

मनुष्य पर जब आपत्ति आपड़ती हैं तब लोग यही कहा करते हैं कि इससमय यही बदा है। यथार्थ में ऐसा नहीं है। यों तो सुख दुःख ईश्वर के आधीन हैं किन्तु अनुचित समय पर कार्य करने से भी मनुष्य दुःख का भागी होता है।

❀ प्रकरण ८ आठवाँ ❀

यात्रा—

हम आगे कह चुके हैं कि स्वास्थ्य के बनाए रखने के लिए, निर्मल वायु के सेवन की अधिक ज़रूरत है किन्तु विचार कर देखा जाय तो यात्रा से यही नहीं वरन् और भी कई एक लाभ हैं।

जब हम कभी यात्रा के लिये अपने घरसे प्रस्थान करें तो हमें यह ध्यान रहे कि हम अपने ज़रूरत की सब चीज़ें इकट्ठा करलें। जिससे परदेश में हमें कष्ट नहो। किसी ने सच कहा है—"परदेश कलेश नरेशनको" तो फिर हमारी तुम्हारी बातही क्या है।

प्राचीनसमय में मनुष्य बहुधा पैदल ही यात्रा किया करते थे, जिससे उन्हें भांति २ के पदार्थ दृष्टिगोचर होतेथे, और स्वच्छ वायु भी मिला करती थी। इससे इन्हें भांति २ के अनुभव प्राप्त करनेमें अधिक परिश्रम नहीं उठाना पड़ता था। प्राचीनसमय में बहुधा मनुष्य यात्राके निमित्त टोलियोंमें जाया करते थे। इसकारण इन्हें अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ता था, और यात्रा भी सुलभ होजाती थी।

परिभ्रमण करने से हमें देश २ के रिवाज रस्म राजकीय संबन्धी बातें, लोगों का रहन सहन, पहनाव, उनकी कारीगरी, और भाषाका हमें पूर्णरूप से ज्ञान होजाता है। इसी हेतु पूर्वजों ने अमुक २ तीर्थस्थान निर्धारित कर रक्खे हैं।

जब हम कभी बाहर जाते हैं तो पक्षियोंको अपने २ घोंसलों में बच्चों की रक्षा करतेहुए बैठे देखते हैं, जिससे हमें माता पिता के कर्तव्य का ज्ञान होता है। हम जब किसी देशमें पहुंचते हैं और वहां के बाग बगीचे, मन्दिर और बड़ी २ इमारतों को देखते हैं, तब हमें उसदेश के लोगों की कारीगरी तथा ज्ञानशक्ति का अनुभवही नहीं होता वरन् इनके सिवाय हम उनके पूर्वजों की भी सराहना करते हैं। यदि

हम वहां के किसी कार्य्यालय में जाते हैं तब हमें उनके विज्ञानशास्त्र के ज्ञान का बोध होता है इसीप्रकार यात्रा से हमें और कई लाभ होते हैं ।

साम्प्रतकालमें यात्रा करना ऐसा कठिन नहीं जान पड़ता जैसा कि प्राचीनसमय में था। आजकल रेल होजानेके कारण हमें एक स्थान से दूसरे स्थान को जानेमें कठिनाई नहीं उठानी पड़ती और थोड़े ही समय में अपने देश को पहुँच सक्ते हैं ।

हमारी सरकारने रेल, तार, और कई नए२ यन्त्र आविष्कार किए हैं, जिनके देखने से हमें इनके विज्ञानशास्त्र संबन्धी ज्ञानकी यथोचित रीति से थाह मिल सक्ती है ।

प्राचीनसमय में यात्रा से हमें अधिक लाभ थे जिनका आजकल अभाव जान पड़ता है। उस समय हमें चोरोंके डरसे हमारे पूर्वजों को अस्त्र शस्त्र रखने पड़ते थे। इसकारण इनका उन्हें भलीप्रकार से ज्ञान था और ऐसे २ शस्त्र आविष्कार किए गएथे जो आज कल देखने में नहीं आते।

हमारा यात्रा करना भी हमारी शिक्षा प्राप्त करने का एक अङ्ग है। परन्तु हम उस समय यात्रा कर सक्ते हैं जब कि हमने अपने सब कामोंसे छुट्टी पाली हो और यात्रा करने के लिए यथोचित द्रव्य हो। बहुधा यह देखने में आता है कि लोग यात्रा करने के लिए लोगोंसे धन कर्ज लिया करते हैं। यात्रा का यह आशय नहीं है कि तुम धन लेकर सैर सपाटे लगाने चलेजावो

और स्त्री बालक तथा अन्य कुटुम्बीजन भूखों मरें।

अमेरिका तथा जापान को देखिये कितनी उच्चकारीगरी का नमूना दिखला रहे हैं। इतने ही पर वे सन्तुष्ट नहीं हैं किन्तु अपनी कलाओं को बढ़ाने में सदैव लगेरहते हैं। प्रतिवर्ष यहां के देशवासियों की टोली यात्रा के निमित्त निकलती हैं जो देश २ में जाकर अपनी विद्या तथा कलाकी तुलना करते हैं और जो कुछ नई बात देखते उसे अपने देशमें जारी करने की चेष्टा करते हैं। बड़े २ राजा महा-राजा इत्यादि इसी अभिप्राय से यात्रा किया करते हैं जिससे वे अपनी प्रजाके सुख के लिए भांति २ के यत्न किया करते हैं।

यात्रा से सबसे भारी लाभ यह है कि हमें

भांति २ के मनुष्य देखने में आते हैं। तथा उन के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए इसे हम भलीभांति सीखलेते हैं।

यात्रा से हम अपनेदेशकी, वाणिज्य, कला, विद्या, और खेती का भलीभांति उद्धार कर-सक्ते हैं तथा नए २ आविष्कार कर इनकी वृद्धि करते हैं।

प्रकरण ९ नौवाँ।

आशा–

आशा एक अद्भुत वस्तु है। इससे हमारे कई एक कठिन से कठिन कामभी सरलता से हल होजाते हैं जब कोई बीमार होता है तब

उसे डाक्टर तथा वैद्य यही आशा देते हैं कि आज नहीं तो कल अवश्यही अच्छे होजाओगे। इससे यमशय्या पर पड़ा हुआ मनुष्यभी एक वार अपने क्षणभंगुर जीवन का फिर अनुभव करने लगता है, इसलिए हमें चाहिए कि हम निराश न हों और अपने कार्य करने में सदैव तत्पर रहें। यदि एक वार किसी काम में सफल मनोरथ न हुए तो हमें चाहिए कि फिर उसे ध्यानपूर्वक करें। किसी कविने सच कहा है:—

सफल न लखि श्रम बैठिबो, तुच्छ कहत विद्वान्।
यातें कार्य न छोड़िये, भली करेंगे राम॥

इसलिए हमें श्रम करने से कदापि मुंह न फेरना चाहिए और सदैव इच्छा हो कि हमें श्रम

का फल अवश्य मिलेगा । और हाथ में लियां हुआ काम पूरा किए बिना कभी न जानेदेंगे ।

परमेश्वर ने आशा सबके लिए बनारखी है हम देखते हैं कि गाय बैल इत्यादि पशुओंमें भी इसका अंश पाया जाता है। हम यदि मकडी को देखते हैं तो जान पडता है कि इसमेंभी इसका अंशहै, कारण कि जब यह अपना जाला बनाती है तब कई वार नीचे फिसल पडती है और फिर अपने काम में लगजाती है और यही आशा रखती है कि कभी न कभी यह जाला पूर्णरीति से बन जावेगा । और जबतक उसे पूरी रीतिसे नहीं बनालेती उसका पीछा नहीं छोडती । इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें आशा नहीं छोड़नी चाहिए । यदि हम अपने

कार्य में एकवार सफलीभूत नहीं हुए तथापि उसके पीछे लगे रहनेपर कभी न कभी सफ-लता अवश्य प्राप्त होगी ।

छापने की कलका ५०० वर्ष पहले आविष्कार हुआ था परन्तु इसके पहलेही एक अमेरिकन विद्वान् ने ढूंढ निकाला था । और आजकल जो इसका इतना भारी प्रचार होरहा है, केवल आशाही का फल है ।

यह हम कह आए हैं कि मनुष्य जब बीमारी के कारण दुर्बल होकर जीवन से निराश हो जाता है तब वही मनुष्य डाक्टर के आश्वास-न देनेसेही अपने दुःख को कम समझता है। और भले चंगे होने की आशा रखता है ।

माता जो बालक का लालन पालन करती

है सोभी केवल आशा के भरोसे । मनुष्य संसार में जितने कार्य करता है सब आशा पर ही निर्भर हैं, बडो २ लड़ाई जिनमें इतना द्रव्य खर्च किया जाता है सो केवल इसी आशासे कि हम अवश्य विजयी होंगे । कोलंवस ने केवल आशा के ही सहारे नई दुनिया ढूँढ निकाली । दुनिया के जितने बड़े २ काम हैं केवल आशा के ही सहारे होते आए हैं, कोलंवस , निपोलियन, होरेशस इत्यादि जितने बड़े २ मनुष्य होगए हैं केवल आशाही का कारण है । इसलिए हमें चाहिए कि आशा न छोड़ें। और इसीसे हम अपनी तथा देशकी उन्नति करसक्ते हैं ।



1901